7 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

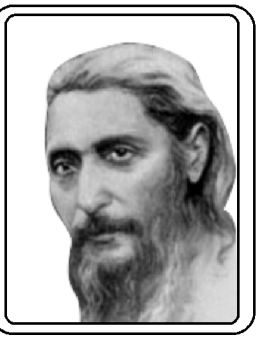

जीवन-परिचय—निरालाजी का जन्म सन् 1896 ई० में बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। इनके पिता रामसहाय त्रिपाठी उन्नाव जिले के गढ़कोला गाँव के रहने वाले थे और मेदिनीपुर में नौकरी करते थे। वहीं पर निराला की शिक्षा बँगला के माध्यम से आरम्भ हुई। इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। बचपन से ही इनको कुश्ती, घुड़सवारी और खेलों में बहुत अधिक रुचि थी। बचपन में ही इनका विवाह 'मनोहरा देवी' से हो गया था। 'रामचरितमानस' से इन्हें विशेष प्रेम था। बालक सूर्यकान्त के सिर से माता-पिता की छाया अल्पायु में ही उठ गयी। निराला जी को बंगला भाषा और हिन्दी साहित्य का अच्छा ज्ञान था। इन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी का भी अध्ययन किया था। इनकी पत्नी एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म देकर स्वर्ग सिधार गयीं। पत्नी के वियोग के समय में ही आपका परिचय पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी से हुआ। निराला जी को बार-बार आर्थिक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा। आर्थिक कठिनाइयों के बीच ही इनकी पुत्री सरोज का देहान्त हो गया। ये स्वामी रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जी से बहुत प्रभावित थे। इनकी मृत्यु सन् 1961 ई० में हुई।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—21 फरवरी, 1896 ई०।
- **जन्म-स्थान**—मेदिनीपुर (बंगाल)।
- **पिता**—पं० रामसहाय त्रिपाठी।
- **मृत्यु**—15 अक्टूबर, 1961 ई०।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- छायावादी रचनाकार।

साहित्यिक सेवाएँ—महाकवि निराला का उदय छायावादी कवि के रूप में हुआ। इन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ 'जन्मभूमि की वन्दना' नामक एक कविता की रचना करके किया। इन्होंने 'सरस्वती' और 'मर्यादा' पत्रिकाओं का निरन्तर अध्ययन करके हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया। 'जुही की कली' नामक कविता की रचना करके इन्होंने हिन्दी जगत् में अपनी पहचान बना ली। छायावादी लेखक के रूप में प्रसाद, पन्त और महादेवी वर्मा के समकक्ष ही इनकी गणना की जाती है। ये छायावाद के चार स्तम्भों में से एक माने जाते हैं।

रचनाएँ—निराला जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

काव्य संग्रह—अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), अनामिका (द्वितीय) (1939) (इसी संग्रह में 'सरोज स्मृति' और 'राम की शक्तिपूजा' जैसी प्रसिद्ध कविताओं का संकलन है), तुलसीदास (1939), कुकुरमुत्ता (1942),

अणिमा (1943), बेला (1946), नए पत्ते (1946), अर्चना (1950), आराधना (1953), गीत कुंज (1954), सांध्य काकली, अपरा (संचयन)।

उपन्यास—अप्सरा (1931), अलका (1933), प्रभावती (1936), निरूपमा (1936), कुल्ली भाट (1938-39), बिल्लेसुर बकरिहा (1942), चोटी की पकड़ (1946), काले कारनामे (1950) (अपूर्ण), चमेली (अपूर्ण), इन्दुलेखा (अपूर्ण)।

कहानी संग्रह—लिलि (1934), सखी (1935), सुकुल की बीवी (1941), चतुरी चमार (1945), ['सखी' संग्रह की कहानियों का ही इस नए नाम से पुनर्प्रकाशन]

निबन्ध-आलोचना—रवीन्द्र कविता कानन (1929), प्रबंध पद्म (1934), प्रबंध प्रतिमा (1940), चाबुक (1942), चयन (1957), संग्रह (1963)।

पुराण कथा—महाभारत (1939), रामायण की अन्तर्कथाएँ (1956)।

बालोपयोगी साहित्य—भक्त ध्रुव (1926), भक्त प्रहलाद (1926), भीष्म (1926), महाराणा प्रताप (1927), सीखभरी कहानियाँ (ईसप की नीति कथाएं) (1969)।

अनुवाद—रामचरितमानस (विनय भाग) (1948), आनंदमठ, विषवृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा, कपालकुंडला, दुर्गेश नन्दिनी, राजसिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युगलांगुलीय, चन्द्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्णवचनामृत, परिव्राजक, भारत में विवेकानंद, राजयोग (अंशानुवाद)।

भाषा-शैली—निराला जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ीबोली का प्रयोग किया है। भाषा में अनेक स्थलों पर शुद्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिसके कारण इनके भावों को सरलता से समझने में कठिनाई होती है। इनकी छायावादी रचनाओं में जहाँ भाषा की क्लिष्टता मिलती है, वहीं इसके विपरीत प्रगतिवादी रचनाओं की भाषा अत्यन्त सरल, सरस एवं व्यावहारिक है। छायावाद पर आधारित इनकी रचनाओं में कठिन एवं दुरूह शैली तथा प्रगतिवादी रचनाओं में सरल एवं सुबोध शैली का प्रयोग हुआ है।

♦

दान

निकला पहिला अरविन्द आज,
देखता अनिन्द्य रहस्य-साज;
सौरभ - वसना समीर बहती,
कानों में प्राणों की कहती;
गोमती क्षीण-कटि नटी नवल
नृत्यपर-मधुर आवेश-चपल।
मैं प्रातः पर्यटनार्थ चला
लौटा, आ पुल पर खड़ा हुआ,
सोचा ''विश्व का नियम निश्चल''
जो जैसा, उसको वैसा फल
देती यह प्रकृति स्वयं सदया,
सोचने को न रहा कुछ नया,
सौन्दर्य, गीत, बहु वर्ण, गन्ध,
भाषा, भावों के छन्द-बन्ध,
और भी उच्चतर जो विलास,
प्राकृतिक दान वे, सप्रयास
या अनायास आते हैं सब,
सब में है श्रेष्ठ, धन्य, मानव।''
फिर देखा, उस पुल के ऊपर
बहु संख्यक बैठे हैं वानर।
एक ओर पन्थ के, कृष्णकाय
कंकाल शेष नर मृत्यु-प्राय
बैठा सशरीर दैन्य दुर्बल,
भिक्षा को उठी दृष्टि निश्चल,
अति क्षीण कण्ठ, है तीव्र श्वास,
जीता ज्यों जीवन से उदास।
ढोता जो वह, कौन-सा शाप?
भोगता कठिन, कौन-सा पाप?
यह प्रश्न सदा ही है पथ पर,
पर सदा मौन इसका उत्तर।
जो बड़ी दया का उदाहरण,
वह पैसा एक, उपायकरण!

मैंने झुक नीचे को देखा,
तो झलकी आशा की रेखा
विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिल
शिव पर दूर्वादल, तण्डुल, तिल,
लेकर झोली आए ऊपर,
देखकर चले तत्पर वानर।
द्विज राम-भक्त, भक्ति की आस
भजते शिव को बारहों मास;
कर रामायण का पारायण,
जपते हैं श्रीमन्नारायण,
दुख पाते जब होते अनाथ,
कहते कपियों के जोड़ हाथ,
मेरे पड़ोस के वे सज्जन,
करते प्रतिदिन सरिता-मज्जन,
झोली से पुए, निकाल लिये,
बढ़ते कपियों के हाथ दिये,
देखा भी नहीं उधर फिर कर
जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर,
चिल्लाया किया दूर दानव,
बोला मैं—"धन्य, श्रेष्ठ मानव!"

('अपरा' से)

अभ्यास प्रश्न

• विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) निकला पहिला·····आवेश-चपल।

(ब) ढोता जो वह·····उपायकरण!

(स) मैंने झुक·····तत्पर वानर।

(र) द्विज राम-भक्त·····धन्य, श्रेष्ठ मानव!

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा निराला जी की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा निराला जी की साहित्यिक सेवाओं एवं काव्य-रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

3. निराला जी द्वारा रचित 'दान' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'दान' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
2. पुल पर खड़े होकर निराला जी क्या सोचते हैं?
3. निराला ने 'दान' कविता के माध्यम से किस पर प्रहार किया है?
4. मानव के विषय में कवि की धारणा पहले क्या थी?
5. 'कानों में प्राणों की कहती' से निराला का क्या तात्पर्य है?
6. 'दान' कविता में कवि द्वारा किये गये व्यंग्य को लिखिए।
7. 'दान' शीर्षक कविता पर एक अनुच्छेद लिखिए।

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. निराला किस युग के कवि माने जाते हैं?
2. निराला की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
3. निराला की पुत्री का क्या नाम था?
4. छायावाद के स्तम्भ कहे जानेवाले कवि का नाम लिखिए।
5. निराला के काव्य की भाषा क्या है?
6. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
   (अ) भिखारी का रंग काला था। ( )
   (ब) शिव-भक्त बन्दरों को पुए खिला रहा था। ( )
   (स) निराला भारतेन्दु युग के कवि माने जाते हैं। ( )

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) सोचा 'विश्व का नियम निश्चल' जो जैसा, उसको वैसा फल।
   (ब) विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिल, शिव पर दूर्वादल, ताण्डुल, तिल।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए—
   (अ) जीता ज्यों जीवन से उदास।
   (ब) भाषा भावों के छन्द-बन्ध।
   (स) कहते कपियों के जोड़ हाथ।
3. निम्नलिखित में समास-विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए—
   कृष्णकाय, दूर्वादल, सरिता-मज्जन, रामभक्त।

● आन्तरिक मूल्यांकन

(1) निराला की रचनाओं की एक सूची बनाइए।

(2) छायावादयुगीन कवियों को सूचीबद्ध कीजिए। ♦